



कपास की खेती के लिए २२ अक्टूबर से २८ अक्टूबर २०२६ तक अठारहवीं साप्ताहिक सलाह

अ. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें:** फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें:** थ्रिप्स, तेला, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।
- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मूलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभी उपयोग करें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

स्वच्छ तरीके से कपास चुनना और भंडारण

- अच्छी बाजार कीमत प्राप्त करने के लिए स्वच्छ कपास चुनने की मानक प्रक्रियाओं का पालन करें।
- कपास कि थैलियों के अलावा प्लास्टिक बैग, प्लास्टिक शीट या अन्य सामग्री का उपयोग कपास के संग्रहण और भंडारण के लिए न करें।

ब.स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		13	14	15	16	17	18	19	21	22	23	24	25
	हिसार	0	6.7	1.2	0	0	0	0	0	0	0	0.5	0
	जिंद								0	0	0	0	0
	सिरसा								0	0	0.1	0.4	0
	रोहतक	0	0	16	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm		64.5 to 115.5 mm		115.6 to 204.4			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल 147 से 182 दिनों में फली विकसित/परिपक्व हो चुकी है। अधिकांश खेतों में दूसरी से तीसरी तुड़ाई चल रही है। अधिकांश खेतों में काले कपास के कीटों का प्रकोप देखा गया है। गुलाबी सुंडी के कारण हरी फलियों को होने वाला नुकसान भी अधिकांश खेतों में आर्थिक सीमा से अधिक है। कुछ खेतों में फली सड़न के साथ-साथ कपास पत्ती कर्ल वायरस रोग की गंभीरता कम देखी गई। हल्की मिट्टी वाले कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई।

सिरसा में, फसल 170 दिनों में फली खुलने और कटाई की अवस्था में है। अधिकांश स्थानों पर दूसरी तुड़ाई चल रही है। कपास के खेतों में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया है, जिससे पौधों की संख्या कम है। पोषक तत्वों और पानी की कमी के कारण छिटपुट स्थानों पर पैरा विल्टिंग के लक्षण भी देखे गए। सभी स्थानों पर हरा तेला और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक नुकसान स्तर से नीचे दर्ज की गई। सफेद मक्खी आर्थिक नुकसान स्तर से ऊपर है, जिसकी संख्या 7-21/3 पत्तियों के बीच है। ईटीएल से ऊपर गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी देखा गया, जिससे 30-45% हरी फलियों को नुकसान पहुंचा। स्कवेयर, आधी खुली हरी फलियों, ब्रेक्टियोल, खुली फलियों और तोड़ी गई फलियों में डस्की कॉटन बग (डीसीबी) की बहुत अधिक संख्या पाई गई।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास के खेतों में सिंचाई न करने की सलाह दी जाती है। कपास में बेहतर फली खुलने के लिए आवश्यकतानुसार 00:00:50 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पर्णाय छिड़काव करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू होने के बाद, 2 फेरोमोन ट्रेप प्रति एकड़ की दर से लगाएं। गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूल या 20 हरी फलियों का निरीक्षण करें। यदि गुलाबी सुंडी का प्रकोप आर्थिक सीमा (>5%) से अधिक हो जाता है, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिली प्रति एकड़ या क्विनालफोस 20 एएफ @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद वैकल्पिक कीटनाशक का अनुवर्ती छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझाने से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित पौधों की जड़ों और आसपास के पौधों को 1.2 ग्राम/लीटर पानी की दर से कार्बेन्डाजिम 50 WP से अच्छी तरह भिगो दें। यदि पैराविल्ट दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद से एक-एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से सींचें। बॉल रॉट और लीफ स्पॉट के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @ 30 ग्राम का पर्णाय छिड़काव, उसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @ 25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल केवल फसल की स्थिति, टिंडों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही करें। अच्छी तरह खुले हुए टिंडों को तेज धूप वाले दिनों में चुनें और उपज को ठंडी व सूखी जगह पर रखें। तनाव के कारण खुले हुए टिंडों को तब चुनें जब उनकी नमी पूरी तरह सूख जाए।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास को सूखा, कचरा-मुक्त और ओस-रहित अवस्था में चुनें। कपास को साफ-सुथरे और चूहों से मुक्त गोदामों या कमरों में रखें। आर्थिक नुकसान स्तर का आकलन करने के लिए, नियमित अंतराल पर गुलाबी सुंडी की निगरानी करें। इसके लिए प्रति एकड़ 2 गंध पाश (लगातार 3 रातों तक 5-8 पतंगों का फंसना) का उपयोग करें या हरे टिंडों की जांच (प्रति एकड़ 20 टिंडों में से 2 क्षतिग्रस्त टिंडे मिलना) करें। PBW के नियंत्रण के लिए, प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी में इनमें से किसी एक का छिड़काव करें: एथियोन 50 EC (800 मिली), फेनवेलरेट 20 EC (100-200 मिली), लैम्ब्डा-साइहेलोथ्रिन 5 EC (200 मिली), साइपरमेथ्रिन 10 EC (200-300 मिली), साइपरमेथ्रिन 25 EC (80-100 मिली), डेल्टामेथ्रिन 2.8 EC (160-200 मिली), अल्फा-मेथ्रिन 10 EC (100-125 मिली), या फेनप्रोपाथ्रिन 10 EC (300-400 मिली)। जरूरत पड़ने पर कीटनाशकों को बदल-बदल कर इस्तेमाल करें। ये कीटनाशक 'डस्की कॉटन बग' को भी नियंत्रित करेंगे। रासायनिक पदार्थों का प्रयोग फसल की स्थिति, टिंडों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता को ध्यान में रखकर ही करें। कपास चुनने के बाद, संक्रमित पौधों या उनके हिस्सों को खेत की मिट्टी में न मिलाएं। आर्थिक रूप से संभव हो तो फसल को जल्द से जल्द समाप्त कर दें। इससे बॉलवर्म (सुंडी) से होने वाला नुकसान कम होगा और वे अगली फसल के मौसम तक नहीं बच पाएंगे। आखिरी बार कपास चुनने के बाद, खेत में भेड़-बकरियों को चरने दें, जिससे बॉलवर्म की संख्या कम हो सके। यदि संभव हो, तो श्रेडर की मदद से कपास के डंठलों को काटकर मिट्टी में मिला दें। यदि आवश्यक हो, तो कपास के डंठलों को खेत से दूर सीधा खड़ा करके रखें। बीमार पौधों को खेत की मिट्टी में न मिलाएं।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		13	14	15	16	17	18	19	21	22	23	24	25
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर								0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.3	0.1	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm			64.5 to 115.5 mm		115.6 to 204.4		
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा		

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल कटाई के चरण में है। अधिकांश खेतों में तुड़ाई का काम चल रहा है।

बांसवाड़ा में, फसल 106 से 113 दिन की है और इस समय इसमें 'बॉल' (टिंडे) विकसित हो रहे हैं। खेत साफ हैं। फसल तनाव (स्ट्रेस) की स्थिति में है। रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक नुकसान स्तर से नीचे है, जबकि हरा तेला का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर से ऊपर है। गुलाबी सुंडी का कोई प्रकोप नहीं है। कुछ खेतों में जड़ सड़न और विल्ट (मुरझाने) के लक्षण देखे गए हैं।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी फसलों में कीटों और बीमारियों की नियमित निगरानी करें। फसल की तुड़ाई (चुनाई) के दौरान कीटनाशकों का छिड़काव न करें। अंतिम तुड़ाई के बाद, खेतों में भेड़-बकरियों को चरने दें, ताकि 'बॉलवर्म' (इल्ली) के अगले सीजन में पनपने की संभावना कम हो सके। यदि संभव हो, तो श्रेडर मशीन की मदद से कपास के डंठलों को काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिए।

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूबर और उदयपुर) में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों की लगातार निगरानी करते रहें। यदि रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से ऊपर चली जाए, तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए 5% नीम बीज गिरी का अर्क (NSKE) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% EC) का 5 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। सफेद मक्खी और हरा तेला को नियंत्रित करने के लिए प्रति एकड़ 8-10 'येलो स्टिकी ट्रैप' (पीले चिपचिपे जाल) लगाएं। यदि रस चूसने वाले कीट आर्थिक क्षति स्तर से अधिक हो जाएं, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC (1.25 लीटर/हेक्टेयर), डायफेन्थियुरोन 50 WP (625 ग्राम/हेक्टेयर), या फ्लोनिक्मिड 50 WG (200 ग्राम/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी (गुलाबी इल्ली) की निगरानी के लिए गंध पाश (5 प्रति हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी इल्ली के प्रकोप पर लगातार नज़र रखें और प्रभावित फूलों (जो फूल गुच्छेदार या 'रोज़ेट' बन गए हों) को इल्ली (लार्वा) सहित नष्ट कर दें। देर से बोई गई फसलों में 'लीफ स्पॉट' (पत्तियों पर धब्बे) की बीमारी को रोकने के लिए, 10 लीटर पानी में कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोज़ेब 63% WP (30 ग्राम) का छिड़काव करें। इसके बाद प्रोपिनेब 70% WP (25-30 ग्राम), या प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली), या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% SC (10 मिली), या फ्लक्सपायरोक्साइड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC (6 मिली) का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। फफूंदनाशक या कीटनाशक का छिड़काव केवल फसल की स्थिति, फलों (बॉल्स) की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही करें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		13	14	15	16	17	18	19	21	22	23	24	25
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0.1	0	0
	धार	0	0	0	3	7	0	0	0	0.1	0.1	0	0
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.2	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm				64.5 to 115.5 mm		115.6 to 204.4	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, बोई गई फसल 98 से 146 दिन की हो चुकी है और इस समय इसमें फूल आने और टिंडे बनने की अवस्था चल रही है। खेतों में निराई-गुड़ाई की गई है और जरूरत के अनुसार खाद और पानी दिया गया है। खेतों में मौसमी खरपतवार उग आए हैं। कुछ खेतों में जैसिड, एफिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी बीमारी के फैलने की सूचना नहीं है।

सलाह:

खंडवा के किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर निराई-गुड़ाई कर लें। यदि लंबे समय तक सूखा रहने के कारण फसल में नमी की कमी हो गई है, तो 13:00:45 खाद का छिड़काव करें। इसके लिए 2 किलोग्राम खाद को 150 से 200 लीटर पानी में घोलें और 10 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 गंध पाश लगाएं। रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए, 5% NSKE के साथ 5 मिली/लीटर नीम का तेल, या नीम के तेल वाले उत्पाद (300 या 1500 पीपीएम) को 5 मिली/लीटर की दर से मिलाएं; साथ ही इसमें 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट के रूप में मिलाकर छिड़काव करें। यदि 'पैराविल्ट' के लक्षण दिखाई दें, तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% WP (100 ग्राम) के साथ 2 किलोग्राम यूरिया को 100 लीटर पानी में घोलें। लक्षण दिखने के तुरंत बाद से शुरू करके, एक सप्ताह के अंतराल पर इस घोल से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी को 2-3 बार अच्छी तरह भिगोएं। कपास के फूलों को प्राकृतिक रूप से झड़ने से रोकने के लिए, 10 लीटर पानी में 4 मिली अल्फा नेफथाइल एसिटिक एसिड (NAA) मिलाकर पौधों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट (<https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory>) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके।

Advisory issued by:

Dr. Vijay N. Waghmare

Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere

Dr. A. S. Tayade

Dr. A. H. Prakash

Dr. S.K. Verma

Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande	Dr. Shivaj Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:

Hindi	: Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani